Mizoram University Journal of Humanities & Social Sciences
(A Bi-Annual Refereed Journal) Vol V Issue 1, June 2019 ISSN (P) : 2395-7352
eISSN : 2581-6780

Reflection of Political Activities in the Novels of Abhimanyu Unnuth With Reference to the Novel *Mundia Pahadh Bol Utha*

Aradhana Shukla*
Sanjay Kumar**

Abstract

Abhimanyu Unnuth is a versatile Hindi writer of Mauritius. He was born to those early migrant Hindi speaking forefathers, who have kept their bond alive with the Hindi language while living in the diasporic countries. He has fostered and favoured Hindi on the global stage. He is an eminent literary writer from Mauritius, who has tried to capture the feeling and temperament of his country, society and time in his writings with sensitivity and vision, and which is evident everywhere in many genres of his Hindi writings. He has composed approximately 32 novels, in which the novelLal Pasinais one of the most famous ones. In this novel, the tragedy of Indian indentured labourers has been accurately portrayed. In his novels, there is a variety of characters of diverse classes present with their bidding and in their social and cultural distinctions. Unnuth ji has also created novels by reflecting the political activities of the Mauritians and their electoral processes. In the novels such as–Hadhatal Kab Hogi, Chun Chun Chunav and Mundia Pahadh Bol Utha, the live pictures of elections and political activities are made available and which make interesting and meaningful studies.

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में राजनीतिक गतिविधियों का यथार्थ चित्रण : 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास के सन्दर्भ में

आराधना शुक्ला*
प्रो. संजय कुमार**

* Ph.D. Research Scholar, Dept. of Hindi, Mizoram University, Aizawl, Mizoram
* *Professor, Dept. of Hindi, Mizoram University, Aizawl, Mizoram

Reflection of Political Activities in the Novels of Abhimanyu Unnuth With Reference to the Novel Mundia Pahadh Bol Utha

*आराधना शुक्ला, शोध छात्रा, हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ॉल- 796 004

**प्रो. संजय कुमार, आचार्य, हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ॉल- 796 004

ईमेल: sanjaykumarmzu@gmail.com

शोध-पत्र सार

बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार अभिमन्यु अनत उन प्रवासी हिंदी लेखकों में से एक हैं, जिन्होंने प्रवासी देशों में रहकर भी हिंदी भाषा के प्रति लगाव बनाए रखा है और उसको पुष्पित एवं पल्लवित कर वैश्विक धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। अभिमन्यु अनत मॉरिशस के ऐसे प्रवासी साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपनी सशक्त लेखनी, संवेदनशील हृदय व पैनी दृष्टि के कारण अपने देश, समाज व समय की नब्ज को पकड़ने की कोशिश की है जिसकी झलक उनके साहित्य में सर्वत्र देखी जा सकती है। इन्होंने लगभग 32 उपन्यासों की रचना की है जिसमें 'लाल पसीना' उपन्यास इनके अक्षयकीर्ति का आगार है। इस उपन्यास में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की त्रासदपूर्ण गाथा का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। इनके उपन्यासों में विषय-वैविध्य तो है ही, साथ-ही-साथ हर वर्ग के चरित्र भी अपनी बोली-बानी एवं सामाजिक,सांस्कृतिक परिवेश के साथ प्रस्तुत होते हैं।अनत जी ने मॉरिशस के तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों एवं चुनावी प्रक्रियाओं को केन्द्र में रखकर भी उपन्यासों की रचना की है।राजनीतिक गतिविधियों एवं चुनावी परिघटनाओं का जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत करने वाले उपन्यासों में- 'हड़ताल कब होगी', 'चुन चुन चुनाव' व 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

बीज शब्द: ब्रिटिश साम्राज्यवाद, शर्तबन्द प्रथा, गिरमिटिया मजदूर, आप्रवासी भारतीय, लोकतंत्र, चुनाव

बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार अभिमन्यु अनत उन प्रवासी हिंदी लेखकों में से एक हैं, जिन्होंने प्रवासी देशों में रहकर भी हिंदी भाषा के प्रति लगाव बनाए रखा है और उसको पुष्पित एवं पल्लवित कर वैश्विक धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। अनत जी का संबंध उन प्रवासी भारतीयों में से है, जिनके पूर्वजों को सन् 1834 ई. में 'शर्तबन्द प्रथा' के तहत मॉरिशस में 'पत्थरों के नीचे सोना-ही-सोना' मिलने एवं सुखमय जीवन यापन करने का सब्जबाग दिखाकर अंग्रेजों द्वारा छल-कपटपूर्वक मॉरिशस ले जाया गया था। जिन्हें मॉरिशस पहुँचने के बाद गोरे शासकों के अमानवीय अत्याचारों का शिकार होना पड़ा। इन्हीं भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की तीसरी और चौथी पीढ़ी के लोग आज मॉरिशस के मूल निवासी बन गये हैं। आज वे अपनी प्रतिभा तथा कार्य-कुशलता से मॉरिशस के प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत हैं और मॉरिशस को वैश्विक पहचान दिला रहे हैं जिनमें अभिमन्यु अनत एक सशक्त हस्ताक्षर हैं।

औपनिवेशिक राष्ट्र रहने के कारण मॉरिशस में यद्यपि अंग्रेजी एवं फ्रेंच भाषा का बोलबाला रहा है किन्तु वहाँ कुछ ऐसे लेखक भी हुए हैं जिन्होंने अंग्रेजी एवं फ्रेंच भाषा में साहित्य-सृजन करते हुए भी हिंदी भाषा में पर्याप्त मात्रा में साहित्य-सृजन किया है। हिंदी भाषा के प्रति विशेषानुराग होने के कारण ही प्रवासी हिंदी साहित्यकारों, विशेषकर अभिमन्यु अनत ने विपुल मात्रा में हिंदी भाषा में साहित्य रचना की है।

अभिमन्यु अनत मॉरिशस के ऐसे प्रवासी साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपनी सशक्त लेखनी, संवेदनशील हृदय व पैनी दृष्टि के कारण अपने देश, समाज व समय की नब्ज को पकड़ने की कोशिश की है जिसकी झलक उनके साहित्य में सर्वत्र देखी जा सकती है। इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं- उपन्यास, नाटक, कहानी, संस्मरण, जीवनी, यात्रा-वृतान्त,बाल-साहित्य, चित्रकारी व संकलन-संपादन आदि में अपनी सशक्त लेखनी चलायी है। इसके साथ ही इन्होंने उपन्यास व कहानी विधा को एक नई भाव-भूमि भी प्रदान की है। मॉरिशसीय हिंदी कथा-साहित्य को पुष्पित, पल्लिवत करने एवं उसको समृद्ध करने में इनका अप्रतिम योगदान रहा है। जिस प्रकार भारतीय हिंदी साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद ने हिंदी कथा-साहित्य को वस्तु एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों से नवीनता प्रदान की। ठीक उसी प्रकार मॉरिशसीय हिंदी कथा-साहित्य में अनत जी ने भी वस्तु एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों से नवीनता प्रदान कर अनेक संभावनाओं के द्वार खोले हैं। प्रेमचंद के समान इनके भी कथा-साहित्य में समाज की विविध समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही विभिन्न वर्गोंके पात्रों के भी दर्शन होते हैं, जिसके कारण इन्हें 'मॉरिशस का प्रेमचंद' कहा जाता है।

यद्यपि अनत जी की साहित्यिक यात्रा नाटकों से आरम्भ होती है, किन्तु जिस विधा के माध्यम से उन्होंने अपने देश मॉरिशस व मॉरिशस से इतर अन्य देशों में भी लोकप्रियता हासिल की है, वह है 'उपन्यास' विधा। इनके उपन्यासों में विषय-वैविध्य तो है ही, साथ-ही-साथ हर वर्ग के चरित्र भी अपनी बोली-बानी एवं सामाजिक,सांस्कृतिक परिवेश के साथ प्रस्तुत होते हैं।इनके उपन्यासों में शिल्पगत नवीनता भी देखने को मिलती है। इन्होंने लगभग 32 उपन्यासों की रचना की है।जिसमें 'लाल पसीना' उपन्यास इनके अक्षयकीर्ति का आगार है। इस उपन्यास में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की त्रासदपूर्ण गाथा का यथार्थपरक चित्रण किया गया है।दूसरे शब्दों में कहें तो 'लाल पसीना' उपन्यास गिरमिटिया मजदूरों की त्रासदी का जीवन्त दस्तावेज है।'लाल पसीना' के अतिरिक्त 'गाँधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' आदि उपन्यासों में भी प्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की त्रासदी का यथार्थपरक वर्णन हुआ है। अनत जी के 'आंदोलन', 'जम गया सूरज', 'तपती दोपहरी', 'अपनी ही तलाश', 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग', और ' शब्दभंग' आदि उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई है। 'शेफाली', 'अपनी अपनी सीमा', 'घर लौट चलो वैशाली', 'लहरों की बेटी' व 'मेरा निर्णय' आदि उपन्यासों में स्त्री जीवन की विविध समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई है। अनत जी ने तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों एवं चुनावी प्रक्रियाओं को भी केन्द्र में रखकर उपन्यासों की रचना की है।राजनीतिक गतिविधियों

एवं चुनावी परिघटनाओं का जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत करने वाले उपन्यासों में- 'हड़ताल कब होगी', 'चुन चुन चुनाव' व 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास की रचना चुनावी गतिविधियों को केन्द्र में रखकर की गयी है। यद्यपि इसमें अन्य अवान्तर कथाएँ भी साथ-साथ चलती हैं, किन्तु केन्द्रीय विषय के रूप में चुनावी गतिविधियों को ही रखा गया है। कोई भी संवेदनशील हृदय,पैनी दृष्टि से सम्पन्न व प्रतिभाशाली साहित्यकार अपने देश,समाज,समय व आस-पास के परिवेश में घटित होने वाली घटनाओं,क्रिया-कलापों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता, इनमें राजनीतिक गतिविधियाँ भी शामिल हैं।

'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास में 'हिंद महासागर का मोती' कहे जाने वाले द्वीप मॉरिशस की, विशेषकर स्वातन्त्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीतिक हलचलों एवं चुनावी प्रक्रिया का यथार्थपरक वर्णन किया गया है।इसमें लेखक ने यह दर्शाया है कि किस प्रकार नेता व मंत्री चुनाव के दौरान आमजनता से खोखले वादे करते हैं,जिन्हें वे कभी पूरा नहीं करते हैं और जनता को इस भ्रम में रखते हैं कि उनकी समस्याओं पर ध्यान दिया जा रहा है।कभी-कभी तो यह कहकर भी उन्हें भ्रम में रखा जाता है कि शीघ्र ही उनकी जरुरतों को पूरा किया जायेगा,जबकि वास्तव में ऐसा होता नहीं है। इतना ही नहीं जब इन नेताओं को वोट की जरूरत होती है, तब ये आम जनता के सेवक बनने का भी ढोंग रचते हैं।उस समय ये आम जनता की अशिक्षा दूर करने,गरीबी मिटाने,बेरोजगारी दूर करने, नौकरी दिलाने व पदोन्नति दिलाने जैसे झूठे वादों के सहारे ही चुनाव की वैतरणी पार करने को अपना लक्ष्य बनाकर जनता के सामने वोट माँगने जाते हैं और उन मुद्दों को पूर्ण करने का ढपोरशंखी वादे करते हैंतथा स्वयं को सच्चा जनसेवक एवं देश का उद्धारक होने का दावा करते हैं। उपन्यास में अरुण के माध्यम से नेताओं की इस छद्म जनसेवक बनने वाली प्रवृत्ति को दर्शाया गया है। अरुण एक चुनावी उम्मीदवार के रूप में वैश्य सभा के सदस्यों से उनके हितार्थ काम करने एवं कभी शिकायत का मौका न देने का वादा करते हुए कहता है- **"आप देखेंगे कि चुनाव जीतने के बाद मैं किस तरह से आप लोगों के हित काम करूँगा। कभी किसी शिकायत का अवसर नहीं मिलेगा आपको।"**[1]अरुण सरीखे लगभग प्रत्येक उम्मीदवार जनता में अपनी पैठ बनाने एवं उनका विश्वास जीतने के लिए तमाम खोखले वादे करते हैं। इतना ही नहीं इन राजनेताओं एवं मंत्रियों द्वारा चुनाव के दौरान देश की बेरोजगार जनता के साथ कपटपूर्ण व्यवहार किया जाता है, विशेषकर शिक्षित बेरोजगार नवयुवकों के भविष्य के साथ एवं उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जाता है। नवयुवकों के वोट अपने पक्ष में करने हेतु व उनका विश्वास जीतने हेतु नेताओं द्वारा बेरोजगार युवकों के लिए फर्जी रिक्तियाँ भी निकाली जाती हैं। इतना ही नहीं कुछ युवकों को तो नियुक्ति पत्र तक दे दिया जाता है। लेकिन चुनाव जीतने के कुछ ही दिनों बाद उनसे वे पद छीन लिये जाते हैं।इस प्रकार की घटनाओं का उल्लेख करते हुए लेखक ने लिखा है- **"लोगों को जब तार मिलने शुरु हुए तो नौकरी प्राप्ति की खुशी के साथ-साथ उनके मन में आशंका भी पैदा होनी शुरु हो गयी कि कहीं सचमुच जैसा कि**

अपने टेलीविजन काम्पेईन के दौरान विपक्षी नेता ने कहा था- 'यह नौकरी हमेशा के लिये नहीं है। वे लोग अगर चुनाव जीत भी जायेंगे... तो भी आपमें से कोई भी टिकेगा नहीं। आप सभी को पन्द्रह दिन की तनख्वाह देकर नौकरी से हटा दिया जायेगा।' "[2]

विपक्षी दल को नीचा दिखाने एवं अपने को जनता का तथाकथित शुभचिन्तक बताने वाले नेताओं का भी चरित्रांकन किया गया है। चुनाव प्रचार के दौरान विपक्षी दल को नीचा दिखाना, उसके दोषों को गिनाना,पूर्व में उसके द्वारा जनता से किए गए वादों का जिक्र करना,जिन्हें वो पूरा न कर सका हो,जनता को झूठी दिलासा देना आदि चुनावी राजनीति की सामान्य बातें हैं।दूसरे शब्दों में कहें तो यही सब चुनाव जीतने के राजनीतिक हथकण्डे हैं,जिन्हें लेखक ने यथार्थपरक रूप से अभिव्यक्त किया है। अरुण जनता के सम्मुख विपक्षियों के दोषों का बखान कुछ इस प्रकार करता है- **"हमने पचास हजार के करीब नयी नौकरियाँ पैदा कीं। विपक्षी दल को यह अच्छा नहीं लग रहा। ये वे ही लोग हैं, जिन्होंने आज से पन्द्रह साल पहले कहा था कि अगर इस देश को आजादी मिल जायेगी तो देश में महामारी फैल जायेगी...ये वे ही लोग हैं, जिन्होंने चावल-आटे पर के सरकारी योगदान को भी दो-तीन महीनों में फरेब का नाम दिया था। नि:शुल्क शिक्षा को भी इन्होंने रिश्वत कहा था... ये उन्हीं लोगों के भतीजे हैं, जिन्होंने आपके बारे में कभी कहा था कि इन गंवारों को वोट का अधिकार देने का मतलब है,बन्दर के हाथ में उस्तरा थमा देना। ऐसे लोगों को, चाहे वे अपने चेहरे पर देवताओं के मुखौटे लगाये क्यों न आ जायें,आप अपने वोट कैसे दे सकते हैं?"**[3]चुनावी सरगर्मियों के दौरान प्रत्येक पार्टी द्वारा विपक्षी पार्टियों के प्रति आरोप-प्रत्यारोप लगाना आम बात है।इतना ही नहीं विपक्षी पार्टी को तरह-तरह से परेशान करना व उसकी गतिविधियों में अवरोध उत्पन्न करने हेतु उस पर व उसकी पार्टी के सदस्यों पर हमला करवाने व दंगे-फसाद करवाने से भी विपक्षी पार्टी वाले नहीं चूकते हैं। उपन्यास में अरुण का मित्र उमेश, जो कि श्रमिक दल के उम्मीदवार की तरफ से मायापुर इलाके में चुनाव प्रचार के लिए जाता है तब उसके पार्टी के सदस्यों पर विपक्षियों द्वारा हमला करवाया जाता है- **"मायापुर इलाके में दिन में दंगा-फसाद शुरू हो गया था। उस इलाके के एक भाग में विरोधी पक्ष का प्रभाव अधिक था। दिन में श्रमिक दल के दो मोटरों के सभी शीशे फोड़ दिए गए थे। जब तीन गाड़ियाँ उस जगह के करीब पहुँची तो उमेश के आदेश पर तीनों मोटरों से दल के झण्डे को उतार लिया गया।...अगर उसकी कारों पर झण्डे होते तो उस इलाके को पार करना उसके लिए नामुमकिन होता।"[4]**

चुनाव प्रचार के दौरान उम्मीदवार विपक्षियों पर सिर्फ हमला करवाने भर से बाज नहीं आते हैं, बल्कि अपने प्रतिपक्षियों की छवि खराब करने, जनता में अपनी पैठ बनाए रखने एवं जनता की सहानुभूति बटोरने के लिए वे स्वयं पर या अपनी पार्टी के सदस्यों पर झूठे हमले करवाने से भी नहीं चूकते हैं।ऐसा वे इसलिए करते हैं,ताकि बहुसंख्य जनता की सहानुभूति व उनका वोट उन्हें मिल सके।उपन्यास में उमेश ऐसे ही मानसिकता से ग्रसित नेताओं का प्रतिनिधित्व करता है। चुनावी प्रक्रिया की इन गतिविधियों का लेखक ने बड़े ही सटीक ढंग से

चित्र खींचा है-"**उमेश ने मुख्य एजेण्ट की ओर देखकर आँखों के इशारे से कुछ पूछा और दूसरे ही क्षण बाद दो नवयुवक माथे और हाथों पर पट्टियाँ लिए सामने आ गये।मैंने अखबार वालों से बात कर ली है। टेलीविजन वालों से भी।... टेलीविजन और अखबारों में इन दोनों लड़कों को लेकर जो खबर आयेगी उससे कम-से-कम पाँच प्रतिशत हमदर्दी के वोट मिलने का पूरा विश्वास है।... ये दोनों प्रेस और टेलीविजन के जरिये लोगों से यह कहेंगे कि विरोधी दल के गुण्डों ने उन पर हमला किया था।**"[5]

चुनावी सरगर्मियों के समय न सिर्फ विरोधियों की छवि खराब करने,उन पर हमला करवाने का प्रयास किया जाता हैबल्कि इसके साथ-साथ उन्हें चुनाव में हरवाने के हर संभव प्रयास भी किए जाते हैं।कभी विरोधियों के इश्तिहारों को फाड़ दिया जाता है, तो कभी उन इश्तिहारों के ऊपर अपना इश्तिहार चिपका कर उन्हें पूरी तरह से ढक दिया जाता है। कभी-कभी तो पोलिंग बूथ पर विपक्षियों के एजेण्टों के रुप में अपने एजेण्टों को खड़ा कर दिया जाता है ताकि वे मनमाने ढंग से अपने पक्ष में अनपढ़ लोगों के वोट डलवा सकें।इन्हीं सारी गतिविधियों को लेखक ने अरुण व उमेश के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है।वैश्य महासभा के प्रधान के जिम्मे पार्टी के झण्डे, तमगे, इश्तिहार, कमीज और अन्य चीजे छोड़ते हुए उमेश ने कहा था-"**इन इश्तिहारों का इस्तेमाल चुनाव से पहले वाली रात में होना है। हम चाहते हैं कि यहाँ से पोलिंग स्टेशन तक रास्ते के किनारे पड़ने वाली कोई भी इमारत इस रंग से बच न पाये।पुलिस से बात की जा चुकी है। आप सभी निर्भय होकर इन सारे इश्तिहारों को प्रतिद्वन्द्वियों के पहले से लगे इश्तिहारों पर चिपका देंगे।उनका एक भी इश्तिहार दिखाई न पड़े। हमें छा जाना है।... हमारे कुछ एजेण्ट विरोधी दल के एजेण्ट के रूप में पोलिंग स्टेशन पर होंगे ताकि वे अपने ढंग से अनिश्चित वोटों को हमारे पक्ष में ला सकें।**"[6]

चुनावी सरगर्मी में विपक्षियों के एजेण्टों को भी बहला-फुसलाकर,विविध प्रकार के प्रलोभन देकर उन्हें अपने पक्ष में कर लेना तथा उनसे अपने पक्ष में जनता से वोट माँगने की अपील करना इत्यादि गतिविधियाँ भी देखने को मिलती हैं। चुनावी प्रक्रिया के इस षडयन्त्र को भी लेखक ने बड़ी संजीदगी से दर्शाया है-"**अरुण के दोनों साथी उम्मीदवारों के चेहरे पर परेशानी साफ दिख रही थी।पता चलाकि पार्टी के दो प्रमुख एजेण्ट विरोधी दल की ओर से खरीद लिए गये थे और वे दोनों 'न्यू-ग्रोव' के कई घरों में जा-जाकर मतदाताओं को उस दूसरी ओर कर रहे थे।**"[7] विपक्षियों द्वारा चुनाव जीतने हेतु न सिर्फ दंगे-फसाद करवाना, एजेण्टों को भड़काना, हमला करवाना, चारित्रिक लांछन लगाना इत्यादि राजनीतिक हथकण्डों को अपनाया जाता है बल्कि इसके साथ ही जातिगत भेदभाव की भी आग भड़काई जाती है।जिन-जिन जातियों की संख्या अधिक होती है उन्हीं जातियों में से उम्मीदवार खड़ा करके विपक्षियों के वोट कम करने का प्रयास किया जाता है।साथ ही स्वयं को जाति विशेष का उद्धारक बताकर स्वयं के पूर्वजों का संबंध उस जाति से जोड़कर जनता से अपनत्व का भाव दर्शाना आदि भी चुनाव जीतने के राजनीतिक हथकण्डे हैं। श्रमिक दल के उम्मीदवार अरुण का राजपूत सभा के सदस्यों के सम्मुख

कहे गये ये वाक्य इसी मनोवृत्ति से परिचालित उम्मीदवारों की पोल खोलते हैं-**"मैं बड़े गर्व के साथ आपको यह बताना चाहूँगा कि मैं जात-पाँत को नहीं मानता,फिर भी किसी एक वर्ग पर के अन्याय को मैं पनपने नहीं दूँगा। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि मेरे अपने दादा राजपूत थे।मेरे अपने भीतर वही खून है,जो आपके भीतर है।... मेरे पिता कहते थे कि हम लोग महाराणा प्रताप के वंशज हैं। महाराणा प्रताप नहीं होते तो भारत से हिन्दू धर्म मिट जाता।"**[8]

राजनेताओं व मंत्रियों का मत है कि चुनाव तो जातिगत भेदभाव के बल पर ही जीता जाता है।जातिगत भेदभाव को भी वे चुनाव जीतने के लिए एक अस्त्र के रूप में अपनाते हैं।उनका मन्तव्य है कि-**"जो चीज राजनीति के पालन-पोषण से फैली हो,उसे राजनीति में दाखिल होकर नहीं मानोगे तो कहीं के नहीं रहोगे। चुनाव जात-पाँत के बल पर ही जीते जाते हैं। धर्मात्मा बनकर नहीं। हाँ, यह दूसरी बात है कि जनता के सामने तो चिल्लाकर यही कहते रहना होगा कि तुम इस जात-पाँत के फर्क को नहीं मानते। यह तो विपक्षियों का फैलाया हुआ है।"**[9]

चुनाव जीतने के लिए नेता लोग न सिर्फ चुनावी हथकण्डे अपनाते हैं बल्कि इसके साथ ही वे तंत्र-मंत्र,टोने-टोटके आदि का भी सहारा लेने से भी नहीं चूकते हैं।उनको पूरा अंधविश्वास है कि टोने-टोटके, झाड़-फूँक, मन्त्र, ताबीज आदि तान्त्रिक क्रियाओं द्वारा भी जीत संभव हो सकती है।उमेश व उसका विपक्षी करमचन्द दोनों ही तान्त्रिकों का सहारा चुनाव के दौरान लेते हैं।उमेश अपने मित्र अरुण को तांचीन कोलो नामक तान्त्रिक विद्या में निपुण युवती के पास ले जाता है।ताकि वह उसके चुनावी परिणाम के बारे कुछ भविष्यवाणी कर सके और चुनाव जीतने के लिए कुछ उपाय भी बता सके।तांचीन कोलो जब अरुण के जीत के बारे में आशंका जाहिर करती है तब उमेश उससे जीत दिलाने हेतु आग्रह करता हुआ कहता है- **"मैं तो इसे तुम्हारे यहाँ इसीलिए लाया हूँ कि तुम उसकी जीत के लिए कुछ भी बाकी न छोड़ो।"**[10] वह तांचीन कोलो से अपना काम करवाने के लिए उसे पचास रुपये एडवांस भी देता है और बाकी काम हो जाने के बाद देने का वादा करता है।उमेश को तान्त्रिक क्रिया-कलापों पर इतना अधिक विश्वास है कि तांचीन कोलो द्वारा दिए गए बेबी पाउडर,जो कि मन्त्र सिद्ध है,को अरुण को हमेशा अपने पास रखने और जनता के सम्मुख जाने से पूर्व उसे लगा लेने का आग्रह करता है ताकि वह लोगों को अपने प्रति प्रभावित कर सके। वह कहता है-**"एक पाउडर है यह।जब भी किसी आदमी को प्रभावित करके अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उसके सामने जाओगे तो इसकी एक चुटकी को अपने चेहरे पर मलकर।... यह बेबी पाउडर है। तांचीन कोलो ने इसमें केवल मन्त्र पढ़े हैं। इसकी एक चुटकी अभी चेहरे पर लगा लो और बाकी संजोकर रख दो।"**[11]वह तो यहाँ तक कहता है कि **'दुनिया के बड़े-बड़े राजनेता इसी के बलबूते अपनी धाक जमाये हुए हैं'**। उमेश अपने विपक्षी उम्मीदवार करमचन्द का हवाला देते हुए कहता है- **"इन मामलों में करमचन्द भी पीछे नहीं है। सुना है, वह मडागेस्कर से ताबीज और न जाने क्या-क्या ले आया है।यहाँ का भी एक ओझा, उसके लिए टोना-टोटका करता रहा है।"**[12]

प्रस्तुत उपन्यास में चुनावी प्रक्रिया,नेताओं की रणनीतियों व मनोवृत्तियों के साथ-साथ आमजनता की उन मनोवृत्तियों को भी उजागर किया गया है जिनसे परिचालित होकर कुछ चतुर व वाक् पटु लोग वोट देने के एवज में प्रत्येक पार्टी के सामने कुछ-न-कुछ शर्तें रखते हैं और दोनों ही पार्टियों को यह आश्वासन देते हैं कि 'वोट हम आपको ही देंगे'। सामने वाले प्रत्याशी से अपना काम निकालने के लिए वे यह भी कहते हैं कि आपका विपक्षी भी हमसे वोट माँगने आया था,वह हमारी अमुक-अमुक शर्तों को मानने को राजी है।किन्तु वोट हम आपको ही देंगे। साथ में वे यह भी कहते हैंकि यदि आप हमारी कुछ शर्तें पूरी करने का वचन दें तो हमारी सभा के सदस्यों के सभी वोट आपको ही मिलेंगे।उपन्यास में अमीचन्द इसी प्रकार के दोहरे चरित्र वालेव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है,जो दोनों ही पार्टियों को वोट देने का वादा करके अपना उल्लू सीधा करते हैं। अमीचन्द अपनी सभा के सदस्यों के विचारों को अरुण के सामने कुछ इस प्रकार से रखता है-**"इस इलाके में राजपूत प्रतिनिधि न तो उस पार्टी में हैं और न ही इस पार्टी में।इस चुनाव क्षेत्र में हमारे वोट तीन हजार से अधिक ही हैं।... आज हम लोगों ने यह तय किया है कि हम सभी एक होकर श्रमिक दल को अपने मतदान देंगे; लेकिन हमारी कुछ शर्तें हैं।... मैं अपने लिए कुछ नहीं चाहता। हमारी सभा के ये दो सदस्य... इनके लिए आपको हर हालत में कुछ करना होगा।... आप मुझे प्रधानमंत्री से मिलाकर केवल इतना आश्वासन दिला दें कि मेरे बड़े बेटे को रेडियो टेलीविजन की वह तरक्की मिलकर रहेगी और मैं अपने लिए क्या माँगूगा। वह दूसरे दल वाले तो कह रहे थे कि मुझे पब्लिक सर्विस का सदस्य बना देंगे।"**[13]अमीचन्द के इस दोहरे चरित्र को उद्घाटित करते हुए अरुण कहता है-**"मैं तो इस बात से डरता हूँ कि चारा लेकर भी न उड़ जाए। दोनों दलों की ओर से खाता है।इसका बड़ा बेटा इस इलाके के तुम्हारे एक प्रतिद्वन्द्वी का बहुत ही घनिष्ठ दोस्त है।"**[14]

इस उपन्यास में पूँजीपतियों,उद्योगपतियों के दोहरे चरित्र को भी उजागर किया गया है। उद्योगपति और पूँजीपति नेताओं व मंत्रियों को चुनाव हेतु अनुदान इसलिए देते हैं ताकि चुनाव जीतने के पश्चात् पदासीन मंत्री उनके काम-धन्धों में किसी भी प्रकार की अड़चने न पैदा करें।इसके लिए वे चुनाव लड़ने वाली प्रत्येक पार्टी को कुछ-न-कुछ आर्थिक सहयोग देकर उनके पक्ष में शामिल होने का ढोंग रचते हैं।जोन फ्रांस फैक्टरी का मालिक 'ग्रां पात्रों'के माध्यम से उन तमाम पूँजीपतियों, मिलमालिकों व विदेशी उद्योगपतियों की रणनीतियों को दर्शाया गया है।ग्रां पात्रों मूलत: हांगकांग का रहने वाला है।किन्तु व्यापार में अधिक पैसे कमाने के उद्देश्य से वह मॉरिशस में अपनी एक फैक्टरी खोलता है और कम लागत में अधिक-से-अधिक लाभ कमाता है।एक तो वह काम में सिर्फ महिला कर्मचारी रखता है।ऐसा वह इसलिए करता है क्योंकि महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम वेतन देना पड़ता है। जबकि काम उतने ही घंटे लिया जाता है जितने घंटे पुरुष करते हैं। दूसरा वह मॉरिशस में कम लागत में निर्मित वस्त्रों को विदेशों में अधिक कीमत पर बेचता है।ग्रां पात्रों सरीखे लोग अपने धन्धे को सुचारु रुप से चलाने के लिये यहाँ की सरकार को खुश रखने का भरसक प्रयास करते हैं।इसीलिए चुनावी सरगर्मियों के दौरान वे प्रत्येक पार्टी को चुनाव हेतु आर्थिक सहयोग जरूर प्रदान करते हैं।ताकि चुनाव के दौरान किसी

पार्टी को यह कहने का मौका न मिले कि हमारी कम्पनी उनके साथ नहीं है।ग्रां पात्रों सरीखे उन तमाम पूँजीपतियों की पोल खोलते हुए लेखक ने लिखा है-**"ग्रां पात्रों अपने दोनों हाथों में लड्डू लिए हुए है। एक पार्टी को तो पहले ही से एक लाख का चैक भिजवा चुका है। अब इस दूसरी को दो लाख। चुनाव कोई भी जीते, किसी को यह कहने की हिम्मत ही नहीं कि हमारी फैक्टरी उनके साथ नहीं थी।... ब्रीफिंग समाप्त करने से पहले ग्रां पात्रों ने धीरे से अपने बेटे छोटे मैनेजर से कहा कि प्रधानमंत्री के नाम राष्ट्र-निर्माण फण्ड के लिए दो लाख का चैक भिजवा दे।"**[15]

उपन्यास में चुनावी प्रक्रिया का यथार्थपरक वर्णन के साथ-साथ चुनाव जीतने के बाद की राजनीतिक गतिविधियों को भी चित्रित किया गया है। पदासीन मंत्रियों व नेताओं,जो भेद-भाव परक दृष्टिकोण एवं भाई-भतीजावाद जैसी प्रवृत्तियों को फलने-फूलने का अवसर देते हैं,की भी पोल खोली गयी है। नये पदासीन मंत्री लोग अपने कार्यकाल में उन व्यक्तियों को ही सरकारी पद व बड़े-बड़े ओहदों पर रखते हैं, जिनके भरसक प्रयासों से वे आज मंत्री पद पर आसीन हैं या वे उन लोगों को ओहदों पर रखना चाहते हैं जो उनके अपने सगे-सम्बन्धी हैं या जिनसे उन्होंने चुनाव प्रचार के दौरान नौकरी दिलाने का वादा किए थे।मंत्री लोग इसके लिए अपेक्षित योग्यता व अनुभवहीनता को महत्व नहीं देते। भले ही उनका सगा-सम्बन्धी तत्संबंधित पद की योग्यता न रखता हो किन्तु उसे नौकरी मिल जाती है और वहीं पर अपेक्षित योग्यता एवं पर्याप्त अनुभव रखने के बावजूद भी जनसाधारण को नौकरी नहीं मिल पाती है।इतना ही नहीं अपने सगे-संबंधियों व हितैषियों को पदासीन करने के लिये मंत्री लोग उन कर्मचारियों व पदाधिकारियों को भी पदच्युत करने से नहीं चूकते,जो अपेक्षित योग्यताधारी,पर्याप्त अनुभवी व कुशल कार्यकर्ता होने के साथ-साथ पूरी ईमानदारी व निष्ठा से अपना काम करते हैं।अरुण जब अपने मित्र उमेश से कहता है कि **"योग्य लोगों को हटाकर अयोग्य व्यक्तियों को जिम्मेवार ओहदे सौंपे जा रहे हैं।... जब से अवांछनीय लोगों को सरकार से हटाने का यह सिलसिला शुरू हुआ है और लगभग पचास अफसर हटाये जा चुके हैं।... पुलिस कमिश्नर और टेलीविजन के निदेशक को भी हटाया जा रहा है।"**[16] तब उमेश इस प्रक्रिया के कारणों की व्याख्या करते हुए स्पष्ट कहता है कि इन योग्य व्यक्तियों को इसलिए भी हटाया जा रहा है क्योंकि एक तो इनकीनियुक्ति विपक्षी पार्टी के कार्यकाल में हुई थी और दूसरा इन पदासीन कर्मचारियों ने चुनाव के दौरान विपक्षियों का साथ दिया था और तीसरा पिछली बार जब विपक्षी पार्टी की जीत हुई थी तो उन्होंने भी अपने विपक्ष के पदाधिकारियों को पदच्युत किया था।उमेश स्वीकार करते हुए कहता है-**"इन दोनों लोगों ने उस हार चुकी पार्टी के साथ अपनी स्वामिभक्ति दिखाई थी,हमारी पार्टी के साथ नहीं। कभी उस पार्टी की भी तो एक बहुत बड़ी जीत हुई थी।... वे लोग हंटिंग से नहीं चूके थे। हम क्यों चूकें।... हम लोगों ने अपने कई लोगों को चुनाव के दौरान वचन दे रखा है।उन लोगों को अपनी सरकार में दर्जा देना तो हमारा फर्ज हो जाता है।इनकी मदद नहीं होती तो हम चुनाव कैसे जीतते?... सभी लोगों के लिए नये ओहदों का आविष्कार तो नहीं किया जा सकता।अत: आवश्यक है कि कुछ अविश्वासी लोगों को हटाकर अपने लोगों को पुरस्कृत किया जाए।"**[17]

इस उपन्यास में देश की बागडोर संभालने वाले तथा देश पर शासन करने वाले पदासीन मंत्रियों की अशिक्षा, अनुभवहीनता व अयोग्यता पर भी प्रकाश डाला गया है।उपन्यास में अरुण,उमेश व अन्य कई लोगों के माध्यम से इस स्थिति को दर्शाया गया है। अरुण अपनी राजनीति विषयक अनुभवहीनता को व्यक्त करते हुए अपने मित्र उमेश से कहता है किमैं इस क्षेत्र में नया-नया हूँ।मुझमें राजनीतिक गतिविधियों की उतनी समझ नहीं है, जितनी कि होनी चाहिए। तब उमेश उसे यह बताते हुए कहता है कि इस क्षेत्र में हर कोई नया होता है। औरों में तो उतनी योग्यता भी नहीं है,जितनी कि एक मंत्री के लिए आवश्यक है- **"तुम तो यों भी पढ़े-लिखे हो।अपने उस मित्र को देखो,मेरा मतलब हमारा वह सामाजिक सुरक्षा मंत्री।बेचारा कल तक तो घर बनाने वाला ठेकेदार था।"**[18]इतना ही नहीं उमेश तो स्वयं के माध्यम से भी इस स्थिति का खुलासा करता है।वह कहता है-**"व्यापार के क्षेत्र में मुझसे अयोग्य कौन हो सकता है?फिर भी सलाहकार बना लिया गया।"**[19] यहाँ पर न सिर्फ देश की बागडोर संभालने वाले मंत्रियों की अयोग्यता एवंअनुभवहीनता को दर्शाया गया है बल्कि इसके साथ ही साथ देश के भविष्य के प्रति चिन्ता भी जाहिर की गयी है कि देश का भविष्य क्या होगा? जब देश पर शासन करने वाले लोग अयोग्य, अशिक्षित व अनुभवहीन हों, जो निज स्वार्थ हेतु सरकार में रहकर देश के भविष्य के साथ खेल रहें हों, तो देश का क्या होगा?

उपन्यास में पदासीन मंत्रियों, नेताओं, उद्योगपतियों, मिल-मालिकों व पूँजीपतियों की आपसी साठ-गाँठ एवं उसके पीछे छिपे निज स्वार्थ की भावना का भी उल्लेख किया गया है। पूँजीपति, उद्योगपति व मिल-मालिक नये पदासीन मंत्रियों को बधाई स्वरूप कुछ उपहार इसलिए देना आवश्यक समझते हैं जिससे मंत्रियों से उनका सौहार्दपूर्ण संबंध बना रहे। ताकि सरकार द्वारा उनके उद्योग-धन्धों में किसी भी प्रकार की कोई अड़चन न आये। सिर्फ उद्योगपति ही नहीं मंत्रियों से सम्पर्क रखना लाभदायक नहीं समझते हैं बल्कि मंत्री लोग भी पूँजीपतियों से मिले-जुले रहने में ही अपना लाभ देखते हैं।वह लाभ चाहे तोहफे के रूप में हो या घूस के रूप में। वे तो इस घूसखोरी प्रवृत्ति को भी एक नया जामा पहनाते हैं तथा इसे लेने से इन्कार करना उचित नहीं समझते। उमेश के माध्यम से मंत्रियों की इस घूसखोरी प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया गया है।उमेश अरुण से कहता है-**"अब तक बीस से अधिक बधाइयाँ आ गयी और... एक बात याद रखना, बैल देने से पहले अण्डे पाकर ही सौदा तय मत कर जाना। कम-से-कम बैल के बदले बकरा जरूर ले लेना।... अपनी इस तरकीबकोकरेप्शन तो तुम कहोगे नहीं।... इसे कहते हैं इंडस्ट्रियल रिलेशनशिप यानी कि औद्यौगिक ताल्लुकात। पाँच साल बाद कुछ भी हो सकता है। इसलिए इस औद्यौगिक संबंध से लाभ उठा लेने में चूकना नहीं चाहिए।"**[20]इससे स्पष्ट है कि पदासीन मंत्री लोग भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे हुए हैं और बिना घूस लिए वे किसी काम कोनहीं करते हैं। उनकी इस प्रवृत्ति से उनके अपने कर्तव्यों के प्रति दायित्वहीनता को उजागर किया गया है। क्योंकि जिन उद्देश्यों को लेकर वे मंत्री पद पर आसीन हुए हैं, उन्हीं दायित्वों को दरकिनार कर वे स्वार्थ की रोटियाँ सेंकने में तल्लीन हो जाते हैं। चुनाव के दौरान तोमंत्री लोग जनता के

सच्चे सेवक बनने का ढोंग करते हैं और जब जनता से किए गए वादों को पूरा करने का समय आता है तब उन्हें निज हित की चिन्ता सताने लगती है और वे भ्रष्टाचार में लीन होकर अपना भविष्य सुरक्षित करने में मशगूल हो जाते हैं।

इस उपन्यास में सरकार व उसके संरक्षण में पल रहे पूँजीपतियों का अपने कर्मचारियों के प्रति किए जाने वाले कठोरतम व्यवहार एवं उनके शोषण के विविध तरीकों का भी वर्णन किया गया है। भ्रष्ट शासनतन्त्र में ईमानदारी से काम करने वालों के प्रति सरकार के अन्यायपरक व्यवहार का पर्दाफाश करते हुए उमेश 'जोन फ्रांस' फैक्टरी के विरुद्ध महिला श्रमिकों का नेतृत्व करने वाली नेहा को मजदूर आन्दोलन से दूर रहने की सलाह देते हुए उन व्यक्तियों का भी जिक्र करता है जिन्हें ईमानदारी से काम करने एवं मजदूरों का नेतृत्व करने पर सरकार की उपेक्षा का शिकार होना पड़ा था। उमेश नेहा से कहता है-**"नेहा, मैं तुम्हें कुछ ऐसे नाम बताना चाह रहा हूँ,जो आज से 40 साल पहले से लेकर अभी दस साल पहले तक यूनियन के नेता थे। पहले तुम्हें उन तीन व्यक्तियों के नाम बताता हूँ,जिन्हें आज से कई वर्ष पहले जनता हर मंच पर फूलों के हार पहनाती थी। जगेशर दयाल का नाम तुमने कभी सुना होगा, दूसरा है एमिल जूलिये और तीसरा करमचन्द है।... आज तीनों में से एक दालपूरियाँ बेचकर अपने परिवार को पाल रहा है। दूसरा काल-बास अनाथालय में पल रहा है और तीसरा अपनी उस बेटी के सहारे जी रहा है,जो सैलानियों के बीच कमाती है।जानती हो, इन तीनों की यह स्थिति क्यों हुई? क्योंकि ये तीनों सही अर्थों में लीडर थे,सही अर्थों में मजदूर के नेता।इन्होंने न तो कभी कोई समझौता किया और न कभी कोई रिश्वत ली।"**[21]

सरकार के संरक्षण में पलने वाले पूँजीपतियों, उद्योगपतियों व मिल-मालिकों की मजदूरों के प्रति विविधोन्मुखी शोषण के तरीकों एवं मजदूरों की शोषित, उपेक्षित एवं दयनीय स्थिति का भी चित्रांकन इस उपन्यास में विस्तार से किया गया है। फैक्टरी में काम करने वाले श्रमिकों की दीन-हीन अवस्था एवं मिलमालिकों के दुर्व्यवहार को रेखांकित करते हुए उमेश कहता है-**"मेरा बाप ईख के कारखाने में पैंतीस वर्ष काम करते हुए मरा। मेरे बड़े भाई ने भी फैक्टरी में सारी जिन्दगी बिता दी।... मेरे बाप ने हमें एकदम तंगहाली में छोड़कर मरते समय एक बात कही थी।... पैंतीस साल कारखाने में काम करके एक पैसा भी नहीं बचा पाया।जो मिलता था, उससे बड़ी कठिनाई से रोटी कपड़ा जुटा पाता था। तुम एक बात जान लो।फैक्टरी में मजदूर कमरतोड़ परिश्रम करके भी अपने लिए नहीं कमा पाता।वह तो मालिक,उसके परिवार और उसके कुत्तों के लिए कमाता है। मैंने मालिक के कुत्तों को खाते देखा है।वैसा खाना तो हमको कभी सपने में भी नसीब नहीं हुआ। दिन-रात की मेहनत के बाद हमें जो मिलता था, वह तनख्वाह न होकर बख्शीश हुआ करती थी शायद। मालिकों के परिवारों और कुत्तों के लिए कमाने के बदले हमें वह बख्शीश मिलती थी।"**[22]उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि किस कदर पूँजीपतियों द्वारा श्रमिक मजदूरों का शोषण किया जाता था। शोषकों के इन अमानवीय कृत्यों

एवं दमनपूर्ण नीतियों तथा शोषितों की निरीहता, अभाव,तंगहाली, भूख से पीड़ित दशा का चित्रण रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भी इन शब्दों में किया है-

"श्वानों को मिलता दूध वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं।
माँ की गोदी में चिपक ठिठुर, जाड़े की रात बिताते हैं॥"

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि देश चाहे कोई भी हो भारत या मॉरिशस या कोई अन्य देश हर जगह शोषकों का एक वर्ग मौजूद है,जो मेहनतकश मजदूरों के श्रम के शोषण के बल पर फल-फूल रहा है और मेहनतकश मजदूरों को कमरतोड़ परिश्रम के बावजूद इतना वेतन नहीं दिया जाता है जिससे कि वे अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। शोषितों की दशा हर जगह लगभग एक जैसी है।शोषण के ताने-बाने हर जगह मौजूद हैं रूप उसका भले ही कुछ भिन्न हो।

उपन्यास में न सिर्फ पूँजीपतियों के शोषणतन्त्र में पिसते मजदूर, श्रमिकों की शोषित, पीड़ित दशा का चित्रण किया गया है बल्कि इसके साथ ही अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति सजग श्रमिकों के शोषण विरोधी स्वर को भी दर्शाया गया है।उपन्यास में फैक्टरियों आदि में कामगारों, विशेषकर महिला कामगारों के साथ किए जाने वाले अन्याय एवं शोषण का वर्णन 'जोन फ्रांस' नामक फैक्टरी की महिला मजदूरों के माध्यम से किया गया है। साथ ही महिला वर्कर्रों द्वारा अपने श्रम का पूरा पारिश्रमिक दिए जाने की माँग करना तथा अपने साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ एकजुट होकर आवाज बुलन्द करना शोषण विरोधी स्वर का ही परिचायक है।इतना ही नहीं ये महिला कर्मचारी फैक्टरी के मालिक द्वारा शर्तें पूरी होते नदेखकर आन्दोलन करने की योजना भी बनाती हैं।इस सन्दर्भ में लेखक ने लिखा है-**"इधर दो तीन दिनों से फैक्टरी की लड़कियों में कानाफूसी के साथ इकट्ठे होते नेहा देखती आ रही थी।वास्तव में कारखाने मेंफिर से शुरु हो आई सख्ती के कारण लड़कियों के बीच बन रही योजना का द्योतक थी वह कानाफूसी और गुटबन्दी।... फैक्टरी की लड़कियाँ दो दलों में बँटी हुई थीं। एक दल शुरु हुई सख्ती और ओवरटाइम के लिये कम पैसे दिये जाने की शिकायत लिए ग्रां पात्रों से मिलना चाहता था और दूसरा दल यूनियन के आदेश पर हड़ताल शुरु करना चाह रहा था।"**[23] और इनके द्वारा किये गये आन्दोलन की वजह से फैक्टरी मालिक को अपने नियमों में बदलाव करना पड़ा और उन्हें उनकी शर्तें भी माननी पड़ी। इनका आन्दोलन इतना सशक्त था कि सरकार को भी इनके आगे झुकना पड़ा।जिसके परिणामस्वरूप 'जोन फ्रांस' कंपनी के राष्ट्रीयकरण करने की योजना बनायी जाती है और मन्त्रिमण्डल में फैक्टरी के राष्ट्रीयकरण संबंधी प्रस्ताव को मंजूरी मिल जाती है। श्रमिकों,मजदूरों का अपने हक केप्रति आवाज उठाना और उसका सार्थक परिणाम प्राप्त करना जहाँ एक ओर मजदूरों के जागरुक चेतना का प्रमाण है।तो वहीं दूसरी ओर उपन्यास के शीर्षक 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' की सार्थकता को भी प्रमाणित करता है एवं उसके भीतर निहित अर्थध्वनियों को भी व्यंजित करता है कि जो मजदूर व श्रमिक वर्ग सदियों से विविधोन्मुखी शोषण का शिकार था और शोषकों के हर अत्याचार, ज्यादतियों को चुपचाप सहन करता आ

रहाथा, आज वह श्रमिक वर्ग अपने साथ हो रहे अन्याय के प्रति आवाज उठाने में समर्थ है। शोषितों द्वारा अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाना और सत्ता पक्ष से सवाल करना ही मुड़िया पहाड़ का बोलना है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अपने उपन्यास 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' में अनत जी ने स्वातन्त्र्योत्तर मॉरिशस की राजनीतिक गतिविधियों एवं चुनावी प्रक्रियाओं का यथार्थपरक चित्रण किया है। भले ही इस उपन्यास में मॉरिशस की राजनीतिक घटनाओं एवं चुनावी प्रक्रिया को केन्द्र में रखा गया हो किन्तु इन समस्त गतिविधियों की झलक कमोवेश हर देश के चुनाव में देखी जा सकती है। राजनीतिक गतिविधियों के वर्णन के साथ ही साथ सरकार के संरक्षण में पलने वाले उद्योगपतियों,पूँजीपतियों के शोषणतन्त्र एवं उसमें पिसते मजदूर व श्रमिक वर्ग के दु:ख-दर्दों को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी हैतथा शोषकों के प्रति शोषितों के विद्रोही स्वर को भी वाणी दी गयी है।

सन्दर्भ सूची:-

1. अभिमन्यु अनत,मुड़िया पहाड़ बोल उठा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1987,पृष्ठ- 28
2. वही, पृष्ठ-66
3. वही, पृष्ठ-67
4. वही, पृष्ठ-67
5. वही, पृष्ठ-70-71
6. वही, पृष्ठ-69
7. वही, पृष्ठ-71
8. वही, पृष्ठ-57
9. वही, पृष्ठ-56
10. वही, पृष्ठ-16-17
11. वही, पृष्ठ-55
12. वही, पृष्ठ-47
13. वही, पृष्ठ-56-57
14. वही, पृष्ठ-58

15. वही, पृष्ठ-49
16. वही, पृष्ठ-105
17. वही, पृष्ठ-104-05
18. वही, पृष्ठ-106
19. वही, पृष्ठ-105
20. वही, पृष्ठ-108
21. वही, पृष्ठ-170
22. वही, पृष्ठ-122
23. वही, पृष्ठ-73